पत्र-लेखन

1. मित्रक पिताक मृत्यु पर मित्रकेँ शोक-पत्र लिखू।

धनेरामपुर

05.05.2013

प्रिय मोहन,

नमस्कार!

कुशल कुशलापेक्षी। काल्हि अहाँक पत्र पाबि उत्सुकतासँ पढ़य लगलहुँ मुदा अहाँक पिताक अचानक मृत्युक समाचार पढ़ि गुम भऽ गेलहुँ। एहेन दुखद शोक-समाचार सुनि घरभरिक लोककेँ अपार शोक भेलनि मुदा कयल की जाय! ईश्वरक लीलाक पार के पाओत? ई शरीर अनित्य अछि, कखन की भऽ जायत केओ नहि कहि सकैत अछि। हुनक मृत्यु एक महान् व्रजाघात थिक। परञ्च मृत्युसँ बचओनिहार केओ नहि। जन्म आ मृत्यु दुनू अभिन्न संगी थिक।

अहाँक पिता सरलता, सज्जनता, शिष्टता आ व्यवहारपटुताक साक्षात् मूर्त्ति छलाह! हुनक मधुर वाणी, अपनापनक भाव आदर-सत्कार स्मरण होइत देरी' आँखि नोरा जाइत अछि एवं कंठ अवरुद्ध भऽ उठैत अछि। एक महापुरुषक निधन पर हम अहाँक संग संवेदना प्रगट करैत छी। हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी जे ओ अहाँकेँ एहि दुःखकेँ सहबाक शक्ति दऽ सान्त्वना प्रदान करथि आ ओहि दिवंगत आत्माकेँ शाश्वत शांति भेटनि।

आशा आ विश्वास अछि जे अहाँ भैयारीमे श्रेष्ठ हयबाक कारणेँ अपन कर्त्तव्यसँ हुनक मर्यादा आ प्रतिष्ठाक रक्षा करब। इति।

अहाँक मित्र

सुनील

पता :- मोहन झा

ग्राम-लालगंज

पो.-सरिसव-पाही

जिला-मधुबनी

2. मित्र द्वारा लिखल गेल पत्रक उत्तर लिखू।

मोहनपुर

14.05.2013

प्रिय मोहन,

नमस्कार!

हम कुशल छी आ अहाँक कुशलता भगवानसँ मनबैत छी। अहाँक पत्र पाबि परम प्रसन्न भेलहुँ। अहाँक उलहन अत्यधिक आनन्द आ अपार दुःखक कारण भऽ गेल अछि। आनन्द एहि हेतु भेल अछि जे अहाँ हमर

कुशल जानबाक लेल उत्सुक रहैत छी। मुदा दुःख एहि लेल भेल अछि जे हमरा स्तब्धता अहाँक कोमल हृदयकेँ ठेस पहुँचओलक अछि। हमरा आशा एवं विश्वास अछि जे कारण बूझि अहाँ हमरा अवश्ये क्षमा करब।

मित्र! परीक्षोपरांत गाम अबितहिँ हम परीक्षोपरांत अस्वस्थ भऽ गेलहुँ। बाइसी भऽ गेल। बेसी काल बेहोश रहैत छलहुँ। बचबाक आशा नहीं छल। अहाँ केँ सूचना देबाक लेल श्रीमान् भाइजी केँ कहलियनि। ओ पत्र पठाय देबाक सूचना देलनि परञ्च पठओलनि नहि। हुनका पूर्ण विश्वास छलनि जे अहाँ हमर अस्वस्थताक सूचना पाबि परीक्षा छोड़ि दौगि पड़ब। आब हम पथ्य खयलहुँ। आशा करैत छी जे शीघ्र स्वस्थ भऽ जायब। औषधि चलि रहल अछि। आब जानक कोनो डर नहि। परिवारक सब गोटा कुशल छथि। अहाँ केँ देखय लेल सभहक मन लागल छनि। अतः परीक्षा समाप्त भेला पर अहाँ वापस एतय आयब। एकहि दिन रहलाक उपरांत गाम चलि जायब। हमरा आशा अछि जे आब अहाँ हमरा प्रति मनमे आन भावना नहि राखब। अयबाक निश्चित समय लिखि पठायब जै सँ मखना बस-स्टैण्ड पर उपस्थित रहत। अवश्ये आयब। इति।

पता :- अजीत झा
ग्राम-कनकपुर
पो.-लोहना रोड
जिला-दरभंगा

अहाँक मित्र
सुमन

□□□

3. दर्शनीय स्थलक विषयमे छोट भायकेँ पत्र लिखू।

खजांची रोड
पटना
10.05.2013

प्रिय राज,

शुभाशिष!

आइ हम आगरासँ घुरलहुँ। एहि बेर हम अपन विद्यालयक शिक्षक एवं छात्रगणक संग पूजावकाशमे घूमय बहरा गेल छलहुँ। आगरामे अनेक ऐतिहासिक महत्त्वक स्थान अछि; जेना-किला, ताजमहल इत्यादि। ताजमहलक तँ गप्पे नहि हुअय! ई श्रीकृष्णक कमनीय क्रीड़ा सभहिक साक्षी यमुनाक तट पर ठाढ़ अछि। एकरा मुगल शहंशाह शाहजहाँ अपन बेगम मुमताजक स्मृतिकेँ चिरस्थायी बनेबाक लेल बनओने छल। एल्डुअस हक्सले एकर रूप-रंगक आ अनुपात-भंगक आलोचना कयने छथि, से हम कहियो पढ़ने रही। साहिर लुधियानवीक ओ नज्म सेहो हम पढ़ने छी जाहिमे ताजक विषयमे ओ लिखने छथि-'इक शाहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर, हम गरीबो की मुहब्बत का उड़ाया है मजाक!' मुदा, एकरा सद्यः देखिकेँ उक्त सबटा कथन तर्कहीन लागल।

ताजक विषयमे की कहू? संसारमे सातटा आश्चर्यक गप्प के कहय, जँ दूइओ तीन आश्चर्य होइत तँ ओहूमे ई सहजे शामिल कयल जाय सकैत छल। ताज! कालक गालपर टघरल अश्रुक दू बुन्न! नहि, ई तँ संगमरमर पर अंकित सनातन नारीक प्रति सनातन पुरुषक प्रेम-कविता थिक। इजोरिया रातिमे ई आओरो आकर्षक बूझि पड़ैत अछि, जेना मुमताज स्वयं शाहजहाँसँ भेट करक लेल सजि-धजिकँ बहराय गेल होअय।

एहि पत्रमे आर की लिखू? भेट भेला पर आओरो गप्प कहब। माकँ प्रणाम कहि देबनि। पिताजी मुम्बइक कृषि-प्रदर्शनी देखिकँ कहिया धरि घुरताह?

पता :- श्री राज ठाकुर
ग्राम-लोहना पश्चिम
पो.-सरिसव पाही
जिला-मधुबनी

तोहर अग्रज
अशोक

□□□

4. खेलकूदक महत्त्वक विषयमे छोट भायकँ पत्र लिखू।

नारायणी कन्या पाठशाला,
पटना सिटी
20.05.2013

प्रिय मुन्ना,

शुभाशीष!

आइ हमरा बाबूजीक एक पत्र प्राप्त भेल। एहिमे ओ तोहर दिनानुदिन खसैत स्वास्थ्य पर चिन्ता व्यक्त कयलनि अछि। हुनक चिट्ठीसँ एहन बुझि पड़ैत अछि जे तोँ एखन 'किताबी क्रीड़ा' बनि गेल छँ। हम स्वयं सेहो अनुभव करैत छी जे जीवनमे प्रगतिक स्वर्णिम शिखरपर आरूढ़ हेबाक लेल परिश्रम परमावश्यक छैक-अध्ययनमे रत होएब आवश्यक छैक, किन्तु एकर तात्पर्य ई कदापि नहि जे ई सभ स्वास्थ्यक बलि दऽ कऽ करी। स्वास्थ्यकेर आहुति दऽ नीक परीक्षाफल पायब कोनो बुधिआरी नहि भेल।

तोँ त'जनिते छँ जे स्वस्थ शरीरमे स्वस्थ मस्तिष्कक वास होइत छैक। स्वामी विवेकानन्द 'अपने नौजवान मित्रों के नाम' जे पोथी लिखने छथि, ओकरा तोँ अवश्य पढ़िहँ। ओहिमे ओ लिखने छथि जे जँ तोँ फुटबॉल नहि खेलाइत छँ, तँ गीताक मर्मकँ सेहो नीक जकाँ नहि बुझि सकैत छँ।

तँ जँ तोँ अध्ययन द्वारा वैज्ञानिक आ वैयक्तिक उन्नति, राष्ट्रक सेवा आ समाजक उत्थान चाहैत छँ, तँ सर्वप्रथम अपन स्वास्थ्यपर ध्यान दहीं। उत्तम स्वास्थ्य लेल शारीरिक श्रम अनिवार्य अछि आ एहि लेल तोरा कोनो-ने-कोनो खेल खेलेबेक चाहियौ।

हम आशा करैत छी जे तोँ हमर कहनाइ मानि अपन आ हमरा लोकनिक हित करबेँ।

पता :- मुन्ना चौधरी
द्वारा-प्राचार्य
पटना कॉलेजिएट स्कूल
दरियापुर, पटना

तोहर दीदी
सुनीता

□□□

5. पिताक मृत्युपर सहपाठीकेँ पत्र लिखू।

विश्वामित्र निवास

तारकेश्वर पथ

पटना

19.05.2013

प्रिय मुकेश,

नमस्कार!

अहाँक पूज्य पिताजीक असामयिक देहान्तक समाचार पाबि हमरा एते मर्मान्तक दुख भेल जे कहि नहि सकैत छी। एखन त' अहाँ सभहिक उपर संकटक पहाड़ टूटि पड़ल अछि। परञ्च, मृत्युपर ककर अधिकार छैक? अहाँ तँ जनिते छी, 'हानि–लाभ, जीवन–मरण, यश–अपयश विधि हाथ!'

एहि हृदय-विदारक क्षणमे हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी जे ओ दिवंगत आत्माकेँ परमशान्ति दउथ आ अहाँ लोकनिकेँ कष्ट सहबाक शक्ति प्रदान करथि। धैर्य, धर्म आ संगीक परिचय तँ विपत्तियेमे होइत छै। जँ एखन अहाँक काज आबि सकी, त' अपनाकेँ धन्य बूझब।

पता :- मुकेश कुमार
मिर्जापुर,
दरभंगा

अहाँक शुभेच्छु
राधेश्याम

□□□

6. सिगरेट पीबासँ मनाही लेल छोट भायकेँ पत्र लिखू।

स्नातकोत्तर छात्रावास

कोठली न.–8

भागलपुर

प्रिय राजेन्द्र,

शुभाशीष!

आइ गामसँ मोहनक पत्र आयल अछि। ओ गाम आ अपन परिवारक शुभ समाचार लिखलक-से जानि बड़ प्रसन्नता भेल। ओ एकटा बात एहन लिखलक जाहिसँ हमरा बड़ बेसी दुख भेल। ओ लिखने अछि जे

हाल-फिलहालमे तोँ सिगरेट पिबऽ लगलेहेँ। सिगरेट पीलासँ कतेक हानि छै, तोँ नहि जनैत छैँ। प्रायः धनीक लोककेँ सिगरेट पिबैत देखि तोँ कहि सकैत छैँ ई पैघत्वक चिन्ह थिक। मुदा तोँ एहन कखनो नहि बूझ। सिगरेटक सेवनसँ फेफड़ामे धुआँक तह जमि जाइत छैक, जाहिसँ भयंकर हृदय-रोग भऽ जाइत अछि। सिगरेट पिउलासँ मुहसँ दुर्गन्ध अबैत अछि। इत्र बेचनिहार कतहु जाइत अछि तँ सुगन्धि पसारैत अछि। दोसर दिस सिगरेट पीनिहार कतहु जाइए तँ दुर्गन्ध परसैत अछि। सिगरेटसँ स्वास्थ्य चौपट होइत अछि। जाहि टाकासँ तोँ नीक-नीक पोथी कीनि सकैत छैँ, स्वास्थ्यवर्द्धक फल खाय सकैत छैँ, बढ़ियाँ वस्त्र धारण कऽ सकैत छैँ आ अपन निर्धन संगीक मदति कऽ सकैत छैँ, ओहि टाका-पैसाकेँ सिगरेटमे जराय देब कतेक अधलाह गप्प थिक, तोँ बुझबाक चेष्टा कऽर।

हम आशा करैत छी जे हमर पत्र पढ़लाक बाद तोँ कखनो सिगरेटकेँ अपन ठोरसँ नहि लगेबेँ। हम तोहर उत्तरक प्रतीक्षा बड़ व्यग्रतासँ कऽ रहल छी।

तोहर बड़का भाय

महेश

पता :- राजेन्द्र कुमार

वर्ग-नवम

उच्च विद्यालय, अंबा

भागलपुर